ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 67-72
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

''महात्मा गांधी की आर्थिक विचारधारा''

शशिबाला

असि0 प्रो0, अर्थशास्त्र विभाग, म0गां0 काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ0प्र0) भारत

Received- 26.04. 2019, Revised- 04.05.2019, Accepted - 16.04.2019 E-mail: drshashibala9@gmail.com

सारांश : *महात्मा गांधी और उनके अनुयायियों के आर्थिक विचारों को संयुक्त रूप से गांधीवादी अर्थशास्त्र कहा जाता है। गांधी जी एक अर्थशास्त्री नहीं बल्कि एक महान राजनीतिक और आध्यात्मिक महापुरूष थे किन्तु सत्य और अहिंसा के अपने दर्शन की संगति के साथ उनके आर्थिक विचारों की एक श्रृंखला थी जो पश्चिमी परम्परागत अर्थशास्त्रियों के विचारों से भिन्न थी। गांधी जी के विचारों का भारतीय विचार और नीतियों पर पर्याप्त प्रभाव है।*

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को पोरबन्दर में हुआ था। वह एक अच्छे परिवार से थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा लन्दन में हुई। वह दक्षिण अफ्रीका में एक वकील के रूप में रहने लगे, जहाँ उन्होंने जातीय भेदभाव के विरूद्ध राजनीतिक आन्दोलन में भाग लिया। वह ईसाइयत और टाल्सटाय, रस्किन और थोरो के आर्थिक विचारों से गहरे रूप से प्रभावित थे। इसलिए उन्होंने अहिंसा की तकनीकी को राजनीतिक आन्दोलन का सक्रिय विधि के रूप में अपनाया। 1906 में भारत आगमन पर, गांधी जी देश के राजनीतिक नेतृत्वकर्ता बन गए। उसी समय, उन्होंने अपने आर्थिक विचार को विकसित किया। अपनी मृत्यु तक गांधी जी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और भारत में राजनीतिक आन्दोलन के निरंतर वास्तविक मार्गदर्शक और प्रेरणा स्रोत बने रहे।

कुंजी शब्द – मार्गदर्शक, प्रेरणास्रोत, अनुयायी, नेतृत्वकर्ता, राजनीतिक, आन्दोलन, पूरिपूर्ति, गैरभौतिकता वादी

अपने आर्थिक विचार में, गांधी, रस्किन की न्दजव जीम रेंज से अधिकाधिक प्रभावित थे। इस पुस्तक से उन्होंने सीखा कि (अ) व्यक्ति के लिए अच्छा, सभी के लिए अच्छा है, और (ब) एक वकील के कार्य का मूल्य, नाई के कार्य के मूल्य के समान है क्योंकि अपने कार्य द्वारा सभी को अपनी जीविका के लिए अर्जन करने का अधिकार है और श्रमिक का जीवन अर्थात् भूमि के काश्तकार और शिल्पी का जीवन मूल्यवान है। थोरू, टालस्टाय और क्रापेटकिन के विचारों से गांधी जी प्रेरित थे। टालस्टाय का सरलता, वैराग्य और समानतावाद का सिद्धांत, गांधी जी के दर्शन का भाग बन गया। भारतीय धार्मिक पुस्तकों में गीता और उपनिषद् तथा भारतीय संतों जैसे कबीर, मीरा, नानक ने भी गांधी जी के विचारों पर गहरी छाप छोड़ी थी।

गांधी जी के आर्थिक विचार तीन अवस्थाओं में विकसित हुएः (अ) 1919 तक नकारात्मक अवस्था जिस काल में उन्होंने आर्थिक विकास की पश्चिमी पद्धति की आलोचना की और एक गैरभौतिकवादी दृष्टिकोण अपनाया जो उनकी पुस्तक Hind Swaraj में सम्मिलित है। (ब) सकारात्मक अवस्था (1919–1934) : इस अवस्था के दौरान उन्होंने स्वदेशी आदर्श के रूप में पश्चिमी सभ्यता का विकल्प प्रस्तुत किया, (स) निर्माणकारी अवस्था (1934–1948) : इस अवस्था में गांधी जी अधिक व्यावहारिक हो गए। उन्होंने ग्रामीण पुर्नजीवन के लिए निर्माणकारी कार्यक्रम दिया और सर्वोदय का आदर्श रखा।

अनुरूपी लेखक

गांधी जी के आर्थिक विचार (Economic Ideas of Gandhi)

गांधी जी मानव को धन के रूप में समझते थे, सोना एवं चांदी नहीं। उन्होंने कहा ''सभी धन की अन्तिम परिपूर्ति पूर्ण उदारता, चमकीली आंखें, खुशहाल मानव जाति को जहां तक संभव हो सके उत्पन्न करना है।'' उनके विचार में एक देश सबसे धनवान होगा अगर यह अधिकांश संख्या में खुशहाल व्यक्तियों का पोषण करता है। इस प्रकार गांधीवादी आर्थिक विचार में, धन की अपेक्षा मनुष्य अधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

गांधी जी अर्थशास्त्र को एक व्यावहारिक विज्ञान समझते थे क्योंकि यह मानव कल्याण को अधिकतम करने के लिए उपाय सुझाता है। उन्होंने मानव मूल्यों पर अत्यधिक बल दिया और मानवीय संबंधों के मौद्रिक आधार की निन्दा की। गांधी जी के अनुसार, ''आर्थिक नियम, जिनका उद्देश्य भौतिक प्रगति के साथ सामाजिक एकता और नैतिक उन्नति करना है, वे प्रकृति के नियमों के अनुसार निर्मित होने चाहिए। प्रकृति के नियमों और अर्थशास्त्र के नियमों में कोई विरोध नहीं होना चाहिए। एक देश के आर्थिक नियम उस देश की जलवायु, भूगर्भीय, तापीय दशाओं द्वारा निर्धारित होते हैं। अतः वे देश की परिस्थितियों के साथ भिन्न होते हैं।

अहिंसा का अर्थशास्त्र (Non-Violent Economics)– गांधी जी अहिंसा की बात करते थे इसलिए उनका अर्थशास्त्र अहिंसा का अर्थशास्त्र कहा जा सकता है। अहिंसा

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

का सिद्धांत गांधीवादी दर्शन का सिद्धांत है। चूंकि बिना किसी हिंसा के उद्योग और क्रिया नहीं हो सकती, इसलिए वह इसे न्यूनतम करना चाहते थे। उनका विश्वास था कि किसी भी रूप में हिंसा, अधिक हिंसा को जन्म देती है। उन्होंने अहिंसात्मक व्यवसाय को परिभाषित करते हुए कहा– जो मूलभूत रूप से हिंसा से स्वतंत्र है और जिसमें शोषण या अन्य के प्रति डाह सम्मिलित नहीं है। भारत की आधारभूत समस्याओं का समाधान अहिंसा के प्रयोग में निहित है। गांधी जी ने पूंजीवाद का विरोध किया क्योंकि यह मानवीय श्रम के शोषण का परिणाम है। उनका विश्वास था कि प्रकृति लोगों की आवश्यकता को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त उत्पन्न करती है; गरीबी तथा भुखमरी नहीं होगी अगर प्रत्येक अपनी आवश्यकता के अनुरूप प्रकृति से लेगा।

विकेन्द्रीकरणः कुटीर उद्योग (Decentralisation : Cottage Industries)– गांधी जी बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण के पक्ष में नहीं थे क्योंकि यह अनेक सामाजिक–आर्थिक बुराइयों के लिए उत्तरदायी था। उनका विश्वास था कि बड़े पैमाने पर मशीनों का उपयोग नीरसता को जन्म देता है। वह विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था के पक्ष में थे। इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में श्रम का शोषण नहीं होता। गांधी जी ने एक विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था की वकालत की। उत्पादन छोटे पैमाने पर अनेक स्थानों में संगठित होना चाहिए। चूंकि गांधी जी, कुटीर और ग्रामीण उद्योगों के विकास के पक्ष में थे इसलिए उन्होंने विकेन्द्रीकरण का सुझाव दिया। गांधी जी का विश्वास था कि विकेन्द्रीकरण प्रजातंत्र के बने रहने और अहिंसात्मक राज्य की स्थापना के लिए आवश्यक है। वह लोगों के घरों में, विशिष्ट रूप से गांवों में, उत्पादन इकाइयां स्थापित करना चाहते थे। कुटीर और ग्रामीण उद्योग, रोजगार बढ़ाने में सहायता करते हैं। सस्ती वस्तुएं उत्पन्न हो सकती हैं क्योंकि अलग संस्थाओं की आवश्यकता नहीं होती; बहुत कम औजारों की आवश्यकता होती है। भण्डारण की समस्या नहीं होती है। परिवहन लागत नगण्य होती है। अति–उत्पादन और स्पध र्ा की बरबादी नहीं होती। ये सभी कारक छोटी इकाइयों के उत्पादन को मितव्ययी बनते हैं। कुटीर उद्योगों का कृषि के साथ एकीकरण किसानों को अतिरिक्त समय पर कार्य प्रदान करता है। इस प्रकार वर्तमान में जो ऊर्जा नष्ट होती है उसका उपयोग हो जाता है। ये उद्योग गांवों की आय में वृद्धि करते हैं और उनकी मूलभूत आवश्यकताओं को संतुष्टि प्रदान करते हैं। ये गांवों से न केवल गरीबी और बेरोजगारी समाप्त करते हैं, वरन् उन्हें आत्मनिर्भर आर्थिक इकाई भी बनाते हैं।

खादी उद्योग (Khadi Industry) – गांधी जी का विश्वास था कि मिलों की बहुतायत कपड़े की पूर्ति की समस्या का समाधान नहीं कर सकती। इसलिए उन्होंने खादी के विकास पर बल दिया। गांधी जी के लिए खादी भारतीय मानवता की एकता का चिन्ह है जिसमें आर्थिक स्वतंत्रता और समानता निहित है। खादी से तात्पर्य मानव–जीवन की आवश्यकताओं का उत्पादन और वितरण का विकेन्द्रीकरण है। खादी आन्दोलन केवल गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका से लौटने के उपरान्त शुरू हुआ। उनका विश्वास था कि खादी उद्योग हजारों लोगों को भुखमरी से बचा सकेगा और गरीब लोगों के अर्जनों की पूर्ति कर सकेगा। उनके अनुसार चर्खे का संगीत हारमोनियम की अपेक्षा अधिक मीठा और लाभदायक होता है। गांधी जी ने इसके लाभों के कारण चरखे के उपयोग की बात की। चरखे में कम पूंजी की आवश्यकता होती है तथा इसको चलाना आसान है। यह एक सतत आय का स्रोत है। यह मानसून पर निर्भर नहीं करता। यह बेरोजगारी की समस्या का समाधान करने में सहायता करता है। चरखा अहिंसा का चिन्ह समझा जाता था। उनका नारा था 'कताई द्वारा स्वराज' (Swaraj through Spinning)।

गांधी जी मशीन का वर्णन 'महादोष' के रूप में करते थे। उनका विश्वास था कि आधुनिक तकनीकी मानव की व्यग्रता, हिंसा और युद्ध के लिए जिम्मेदार है। यह भौतिक आवश्कयताओं की वृद्धि के लिए भी उत्तरदायी है। मशीनों का उपयोग, धनी लोगों के वर्ग का सृजन करता है और धन के असमान वितरण को जन्म देता है। गांधी जी मशीन के विरूद्ध नहीं थे। उन्होंने कहा है, ''चरखा स्वयं एक मशीन है, एक छोटी दांत की कुरेदनी भी एक मशीन है''। मैं केवल उसके विरूद्ध हूँ जो श्रम बचत मशीन की सनक है। मनुष्य श्रम को बचाते जाते हैं, परिणामस्वरूप हजारें बिना काम के खुली सड़क पर भुखमरी के लिए छोड़ दिए जाते हैं किन्तु वह सभी विनाशकारी मशीन के विरूद्ध थे। उन्होंने उन उपकरणों और मशीनों का स्वागत किया जो व्यक्तिगत श्रम की बचत करते हैं और लाखों कुटीर मजदूरों के भार को हल्का करते हैं। गांधी जी ने बल दिया कि वह बड़े पैमाने पर उत्पादन के विरूद्ध केवल उन चीजों के लिए है जिन्हें बिना किसी परेशानी के गांव उत्पन्न कर सकते हैं। उनका विश्वास था कि मशीन हानिकारक है, जबकि वही चीज लाखों हाथों द्वारा आसानी से उत्पन्न हो सकती है। उन्होंने लिखा 'यंत्रीकरण अच्छा है, जब कार्य को पूरा करने के लिए हाथ बहुत ही कम हों। यह बुरा है जब कार्य के लिए आवश्यकता से अधिक हाथ हों, जैसा भारत की स्थिति में है'। 1938 में उन्होंने हरिजन

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

में लिखा, ''अगर मैं अपने देश की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति 300 लाख के बजाय 30,000 लोगों द्वारा उत्पन्न कर, कर सकता हूँ तो मैं इसके बारे में नहीं सोचूंगा अगर ये 30 मिलियन बेरोजगार नहीं हैं।'' संक्षेप में, गांधी जी तकनीकी बेरोजगारी के डर से अवगत थे। उन्होंने देश के में अतिरेक श्रम के साथ उत्पादन की श्रम–प्रधान विधि की आवश्यकता पर बल दिया। गांधी जी मशीन पर विचार आज भी प्रासंगिक है। छः दशक से अधिक के आयोजन के बावजूद, मशीन के प्रयोग और आर्थिक विकास के साथ बेरोजगारी मौजूद है और बढ़ रही है।

गांवों का पुनर्जीवन या ग्रामीण सर्वोदय (Re-generation of Villages or Village Sarvoday):गांधी जी ने ग्रामीण सर्वोदय के आदर्श का विकास किया। प्राचीन ग्रामीण अर्थव्यवस्था की चर्चा करते हुए गांधी जी ने कहा– ''उपभोग तथा वितरण के साथ ही उत्पादन किया जाता था और मौद्रिक अर्थव्यवस्था का कुचक्र अनुपस्थित था। उत्पादन दूरस्थ बाजारों के लिए न होकर तुरन्त उपभोग के लिए किया जाता था। समाज की सम्पूर्ण संरचना अहिंसा पर आधारित थी।'' गांधी जी समृद्धिशाली कृषि, विकेन्द्रित उद्योग और लघु पैमाने के सहकारी संगठन के साथ प्राचीन ग्रामीण समुदायों का पुनः प्रवर्तन चाहते थे। वह सभी स्तरों पर लोगों की भागीदारी भी चाहते थे। उन्होंने घोषणा की कि वास्तविक भारत शहरों में न होकर ग्रामों में है और वे इस वाक्यांश से पूर्णतः सहमत थे कि भारतीय ग्राम ''गोबर के ढेर पर बने हुए अस्वच्छ मकानों के समूह के समान हैं। उनकी इच्छा थी कि प्रत्येक भारतीय ग्राम आत्मनिर्भर गणतंत्र में परिणत हो जाये। उनके ग्राम सर्वोदय के आदर्श में निहित था कि एक आदर्श ग्राम अवश्य ही निम्न शर्तों को पूरा करे : (1) ग्राम की संरचना व्यवस्थित होनी चाहिए; (2) फलों के वृक्ष होने चाहिए; (3) एक धर्मशाला और एक छोटा अस्पताल होना चाहिए; (4) भोजन और कपड़े के मामले में स्वावलम्बी होना चाहिए; (5) सड़कों तथा गलियों को स्वच्छ रखना चाहिए; (6) पूजा स्थलों को सुन्दर और स्वच्छ होना चाहिए; (7) प्रत्येक गली मेंपानी की निकासी का प्रबंध होना चाहिए; (8) ग्रामों को डाकुओं और जंगली जानवरों में पूर्ण सुरक्षित होना चाहिए; (9) एक सार्वजनिक भवन, एक विद्यालय और एक थियेटर भवन होना चाहिए; (10) पानी की प्रभावी व्यवस्था होनी चाहिए; (11) खेल का मैदान, पशुघरों इत्यादि की व्यवस्था होनी चाहिए; (12) अगर जगह अधिक हो तो तम्बाकू, अफीम को छोड़कर नकदी फसलें उपजायी जाए; (13) आधारिक कक्षा तक पर्याप्त शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए (14) ग्रामीण क्रियाओं को सहकारी आधार पर संगठित होना चाहिए; (15) ग्रामीण प्रशासन और सरकार, पंचायतों के हाथों में होने चाहिए जिसमें प्रत्येक वर्ष वयस्क ग्रामीणों द्वारा 5 सदस्य निर्वाचित किए जाएं; (16) ग्राम पंचायतों को न्यायिक, कार्यकारी और विधान संबंधी अधिकार होने चाहिए; (17) प्रत्येक गांव के लिए ग्रामीण गार्डों की प्रणाली अनिवार्य होनी चाहिए; और (18) जाति–प्रथा का अन्त होना चाहिए।

गांधी जी विश्वस्त थे कि अगर भारत में सभी ग्राम इस दिशा में पुनर्जीवित होंगे तो उनके लिए चिंता की कोई बात नहीं होनी चाहिए। किन्तु गांधी जी जानते थे कि आदर्श ग्रामों को स्थापित करना सरल नहीं है, इसलिए उन्होंने ग्राम उद्योगों के विकास पर जोर दिया।

न्यासवादी या थातेदारी सिद्धांत (The Truesteeship Doctrine) गांधी जी ने लिखा, पूंजीपति बड़ी मात्रा में धन संचित करते हैं, वे चोर हैं। अगर कोई व्यक्ति उत्तराधिकार में बड़ी सम्पत्ति प्राप्त करता है या व्यापार और उद्योग द्वारा बड़ी मात्रा में धन एकत्र करता है तो सम्पूर्ण सम्पत्ति उसकी नहीं है। यह सम्पूर्ण समाज की है और अवश्य ही सभी के कल्याण पर व्यय होनी चाहिए। आर्थिक समानता की स्थायी स्थिरता प्राप्त करने के लिए, वह हिंसा और खूनी क्रांति की उपेक्षा चाहते थे। वह चाहते थे कि पूंजीपति, थातेदार या न्यासी हो इसलिए उन्होंने थातेदारी का सिद्धांत विकसित किया। सभी सामाजिक सम्पत्ति सभी लोगों के लिए है– चाहे धनी हो या गरीब। पूंजीपति को थातेदार के रूप में केवल अपनी देखभाल नहीं करनी चाहिए वरन् दूसरों की भी करनी चाहिए। श्रमिक पूंजीपतियों को अपना हितकारी समझेंगे और उन पर भरोसा करेंगे। इस प्रकार पारस्परिक सद्भाव और विश्वास की सहायता से आर्थिक समानता का अद्भुत आदर्श प्राप्त हो सकेगा।

जीविका श्रम का नियम (Law of Bread Labour)– जीविका श्रम का नियम टी0एम0 बोनडरेफ द्वारा प्रतिपादित किया गया और रस्किन एवं टॉलस्टाय द्वारा लोकप्रिय बनाया गया। यह नियम जोर देता है कि मनुष्य अपने श्रम द्वारा ही अपनी जीविका के लिए अर्जित करे। गांधी जी के अनुसार यह जीविका श्रम का नियम केवल कृषि से संबंधित है। किन्तु प्रत्येक व्यक्ति कृषक नहीं होता। उसे जीविका प्राप्त करने के लिए कुछ दूसरा कार्य करना ही होगा। अगर सभी लोग जीविका के लिए काम करें तो सभी के लिए पर्याप्त भोजन और कपड़ा होगा, वे स्वस्थ और सुखी होंगे और खाद्यान्न–कमी की समस्या नहीं होगी, कोई बीमारी और कोई भुखमरी नहीं होगी। उनका विश्वास था कि शारीरिक श्रम के बिना कोई भी भोजन का अधिकारी नहीं है। उन्होंने धनी को भी जीविका के लिए शारीरिक श्रम करने की सलाह दी थी।

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

खाद्यान्न समस्या (Food Problem)—गांधी जी ने अपने जीवन का सबसे भीषण अकाल 1943–44 के दौरान देखा था जब देश भर में अनाज के अभाव के कारण बंगाल को बहुत अधिक हानि हुई। प्रारंभ में गांधी जी ने कहा खाद्यान्न की यह कमी कृत्रिम रूप से बनाई गई है, किन्तु बाद में जब मद्रास, बंगाल और असम का दौरा किया तो उन्होंने पाया कि खाद्यान्न की कमी वास्तविक है, कृत्रिम नहीं। उन्होंने भारत में खाद्यान्न–कमी की समस्या को सुलझाने के लिए निम्न उपायों का सुझाव दियाः (1) प्रत्येक व्यक्ति को अपनी खाद्यान्न की आवश्यकता को न्यूनतम करना चाहिए और जहां तक संभव हो सके खाद्यान्न और दालों के उपभोग को न्यूनतम करके इसके स्थान पर सब्जियों, फलों और दूध का उपभोग अधिक करना चाहिए; (2) प्रत्येक बाग का उपयोग खेती के उद्देश्य के लिए हो; (3) फौजों द्वारा खाद्यान्न और दालों के उपभोग में कमी की जाये; (4) काला–बाजारी को रोका जाए; (5) सिंचाई सुविधाएं प्रदान करने के लिए सरकार को गहरे कुएं खुदवाने चाहिए; (6) तिलहन और खल इत्यादि के निर्यात को बन्द किया जाए। गांधी जी खाद्य नियंत्रण के विरूद्ध थे क्योंकि उनका विचार था कि यह न केवल कृत्रिम कमी पैदा करता है वरन् लोगों को दूसरों पर निर्भर बनाता है। वे कृत्रिम उद्योग बन जाते हैं। इसलिए नवम्बर 1947 में उन्होंने भारत सरकार से खाद्य नियंत्रण को अंत करने का आग्रह किया था।

जनसंख्या (Population) – गांधी जी ब्रह्मचर्य और आत्मसंयम द्वारा सन्तति नियंत्रण के पक्ष में थे न कि कृत्रिम विधियों के उपयोग द्वारा। वह आत्म–संयम को 'अचूक संप्रभु विधि' मानते थे। वह काम–भावना का प्रचार करना चाहते थे। उन्होंने उन लोगों की आलोचना की जो अतिजनसंख्या की समस्या के समाधान के लिए सन्तति नियंत्रण की आवश्यकता की बात करते थे। उन्होंने कहा, ''मेरे विचार में उचित भूमि–व्यवस्था अच्छी कृषि और सहायक उद्योगों द्वारा यह देश आज की तुलना में दुगुनी जनसंख्या का पालन–पोषण कर सकता है। ''गांधी जी औरतों के बन्ध याकरण विरोधी थे, क्योंकि यह गैर–मानवीय है।

मद्यनिषेध (Prohibition)– गांधी जी के अनुसार 'कॉफी, चाय, तम्बाकू और शराब का उपयोग व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक और नैतिक विकास के लिए हानिकारक है। उनके विचार में, 'शराब का उपयोग के वह विरूद्ध नहीं थे। हजारों शराबियों को अपने बीच देखने की अपेक्षा उन्हें भारत को एक निर्धन देश देखना पंसद था। एक लेख में उन्होंने लिखा, 'यदि उन्हें एक घण्टे के लिए भारत का डिक्टेटर नियुक्त कर दिया जाए तो सबसे पहले वह बिना मुआवजा दिए, मदिरा की सभी दुकानों को बंद करवा देंगे और मिल मालिकों को, कर्मचारियों के लिए बिना हानि वाल पेयों की व्यवस्था करने के लिए जलपान गृह स्थापित करने के लिए विवश करेंगे। उन्होंने कहा कि मदिरापान की बुराई को केवल कानूनी उपायों द्वारा दूर नहीं किया जा सकता। उसके द्वारा सुझाये गए अन्य उपाय निम्न हैं :

(अ) जनमत शिक्षित किया जाए;

(ब) बिना हानि वाले पेयों की बिक्री के लिए जलपान गृह स्थापित किए जाएं;

(स) नशीली वस्तुओं के विक्रय से जो आय प्राप्त हो, उनका उपयोग मद्यनिषेध के पक्ष में जनमत हासिल करने के लिए किया जाए।

महात्मा गांधी ने कामगारों के कल्याण, उनकी प्रतिष्ठा और उचित मजदूरी पर बल दिया। 9 जून, 1946 के हरिजन में उन्होंने लिखा 'सभी उपयोगी कार्य कामगार को समान और बराबर मजदूरी में ले आयेंगे। तब उनको उतना दिया जाए कि वे अपना और अपने परिवार का पोषण कर सकें। कामगारों की दशा में सुधार के लिए सर्वप्रथम उनका दावा न्यूनतम रहन–सहन मजदूरी है जिससे परिवार के 4 से 6 सदस्य एक मानव–जीवन पर निर्वाह कर सकते हैं। उन्होंने 1920 में लिखा था कि मजदूर को अधिक मजदूरी और कम काम दिया जाए जिससे उसके लिए निम्न चार चीजें निश्चित रूप से हों–स्वच्छ घर, स्वच्छ शरीर, स्वच्छ बुद्धि और एक स्वच्छ आत्मा।

जहां तक श्रम और पूंजी के बीच संबंध की बात है, महात्मा गांधी ने हमेशा इनके बीच एकता का सुझाव दिया। उनके अनुसार ''पूंजी श्रम की नौकर है, मालिक नहीं। फिर वह श्रम संघों के निर्माण में विश्वास करते थे। अगर मजदूरों के अधिकारों को स्वीकार नहीं किया जाता तो वे हड़ताल पर जा सकते हैं जो अहिंसा और सत्य पर आधारित होगा।''

सरलता (Simplicity)– महात्मा गांधी मानवीय आवश्यकताओं की अधिकता के विरूद्ध थे। एक सरल जीवन व्यतीत करने के लिए मनुष्य का जीवन अनैतिकता, असत्यता और राजनीतिक लाभ से अछूता होना चाहिए। उनका स्पष्ट विश्वास था कि पश्चिमी भौतिकवाद और उद्योगवाद ने मानवीय आवश्यकताओं में वृद्धि की है। उन्होंने हमेशा सरल जीवन, सादा रहन–सहन, उच्च विचार के लिए आग्रह किया, जिससे इस प्रकार के जीवन की आवश्यकताओं की संतुष्टि आसानी से हो सके। महात्मा गांधी के अनुसार, 'खुशी आवश्यकताओं को कम करने में है, बढ़ाने में नहीं।'

विनिमय अर्थव्यवस्था (Exchange Economy) – विनिमय अर्थव्यवस्था पर गांधीवादी विचार स्वदेशी भावना पर आधारित हैं। प्रत्येक भारतीय गांव स्वालम्बी और आत्म सहयोगी हो, अन्य गावों से केवल उन्हीं आवश्यक वस्तुओं

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

का विनिमय करे जो स्थानीय रूप से उत्पन्न योग्य नहीं है।

व्यक्ति जो स्वदेशी की शिक्षा स्वीकार करता है, निश्चित चीजों की अनुपलब्धता के कारण भौतिक पीड़ा और असुविधा को अनुभव नहीं करेगा जो वह उपयोग करता है। वह क्रमशः उन चीजों के बिना रहना सीखता रहेगा जो इस समय उसके जीवन के लिए आवश्यक मानी जाती है।

महात्मा गांधी ने इस प्रकार की चीजों जैसे पिन और सुई की अनुपलब्धता के लिए चिन्तित होने को नहीं कहा क्योंकि ये भारत में निर्मित नहीं होती थीं। वह उन वस्तुओं को अन्य देशों (जैसे स्विटजरलैण्ड से घड़ियां, इंग्लैंड से सर्जरी उपकरण) से खरीदने के लिए तैयार थे जो उसकी वृद्धि के लिए आवश्यक थीं किन्तु वह इंग्लैंड या जापान या विश्व के किसी अन्य देश से उत्तम किस्म के कपड़े का एक इंच भी खरीदने को तैयार नहीं थे क्योंकि कपड़े का आयात घरेलू उद्योग के नाश का कारण था, यह इस देश के लाखों निवासियों के हितों के लिए हानिकारक था। सभी विदेशी वस्तुओं के संदर्भ में उन्होंने जो निर्देशात्मक सिद्धांत दिया वह था–उन वस्तुओं का आयात नहीं किया जाए जो देशी उद्योग के हितों के लिए संभवतः हानिकारक सिद्ध होती है।

अस्पृश्यता (Untouchability) – गांधी जी का विश्वास था कि अस्पृश्यता ईश्वर और मनुष्य के विरूद्ध अन्याय हैं यह विष के समान धीरे–धीरे हिन्दुवाद की जीवात्मा को खा रही है। यह अस्पृश्य और स्पृश्य दोनों के लिए अपमान है। उन्होंने महसूस किया कि स्वराज का कोई अर्थ नहीं, अगर लगभग 4 करोड़ लोगों को चिरस्थायी अधीनता के अन्तर्गत रखा जाता है और अपने श्रम और राष्ट्रीय संस्कृति के लाभों से जानबूझकर वंचित किया जाता है उनके अनुसार अस्पृश्यता न केवल हिन्दुत्व का अनिवार्य अंग है वरन् एक प्लेग है जिसे प्रत्येक हिन्दू को रोकना चाहिए।

महात्मा गांधी ने हिन्दुओं पर अस्पृश्यता के कैंसर के लिए सम्पूर्ण दोष लगाया। उनके अनुसार, 'अस्पृश्यता की समाप्ति से तात्पर्य मनुष्य में व्याप्त अशुद्धता के विरूद्ध लड़ाई से हैं इसका अर्थ सम्पूर्ण विश्व की सेवा और उसके लिए प्यार भी है। यह मनुष्य और मनुष्य के बीच के अवरोध को समाप्त कर देगा।'

गांधीवादी अर्थशास्त्र का मूल्यांकन (Assessment of Gandhian Economic)– गांधीवादी अर्थशास्त्र परम्परावादी अर्थशास्त्र से भिन्न है क्योंकि यह कोई स्पष्ट सिद्धांत नहीं है। गांधी जी ने स्वयं कभी भी किसी अर्थशास्त्र का अध्ययन नहीं किया। वह केन्ज और मार्शल के विचारों से अनभिज्ञ थे। उन्होंने 1942 में जेल के दौरान मार्क्स को पढ़ा और उसका प्रभाव था ''अगर उसने 'The Capital' लिखा होता तो संभवतः वह इसे और अधिक सरल तरीके में प्रस्तुत करता। यह स्वाभाविक है कि परम्परावादी अर्थशास्त्रियों ने गांधीवादी विचारों को वैज्ञानिक नहीं पाया। फिर, उनके विचारों में अनेक विरोधाभास हैं जो उनके व्यक्तित्व की परिपक्वता के साथ उनके विचारों के क्रमिक विकास के कारण आए। उदाहरण के लिए उनकी मशीन के प्रति अत्यंत उदासीनता जो हिन्द स्वराज में दिखाई देती है, बाद के वर्षों में पर्याप्त उदार होती जाती है।

गांधीवादी विचारेां के मूल्यांकन पर यह निर्भर करता है कि कोई गांधीवादी मान्यताओं से सहमत है या नहीं। अगर आलोचक सरलता, अहिंसा, विकेन्द्रीकरण की नीति तथा नैतिक विचारों के साथ सहमत हैं जो गांधीवादी विचारों के निर्माण का आधार है तो वह संभवतः पायेगा कि गांधीवादी विचारों की सम्पूर्ण प्रणाली काफी तार्किक है। अन्यथा परम्परावादी अर्थशास्त्री पायेंगे कि गांधीवादी विचारों में लोकवित्त, रक्षा और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की समस्या, मौदिक प्रबंधन और आर्थिक आयोजन जैसे विषयों पर सामंजस्य की अत्यंत कमी है।

गांधीवाद और समाजवाद के बीच संबंध रूचिकर है। गांधी जी ने स्वयं घोषणा की थी कि वह एक समाजवादी हैं और उनका सर्वोदय का आदर्श परम्परागत भारतीय समाजवाद है। किन्तु तकनीकी रूप से, गांधी जी समाजवादी नहीं है।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण से, गांधीवादी अर्थशास्त्र अपने दृष्टिकोण में प्रतिक्रियावादी है। गांधी जी ने वर्ग–संघर्ष को मानने से अस्वीकार कर दिया और वास्तविकता यह है कि इतिहास एक अवस्था से दूसरी में विकसित होता है, इस प्रकार पूंजीवाद की वर्तमान अवस्था से समाजवाद की ऊँची अवस्था को गुजरता है। सिसमोण्डी के समान गांधी जी का पूंजीवादी समाज की समस्या का समाधान भौतिक प्रगति और तकनीकी आविष्कारों के स्थगन तथा आर्थिक संगठन की विकेन्द्रीकृत और सरल प्रणाली की ओर लौटने में निहित है।

अनेक समाजवादी विचारकों, विशेषकर जे0बी0 कृपलानी, जयप्रकाश नारायण और राममनोहर लोहिया ने गांधीवादी 'सर्वोदय' को भारतीय समाजवाद के आदर्श के रूप में स्वीकार किया। वे मानते थे कि प्रजा–समाजवाद, गांधीवाद और समाजवाद का योग है और विश्वास करते थे कि मार्क्सवाद पश्चिमी औद्योगिक राष्ट्रों के अनुरूप है लेकिन भारतीय परिस्थितियों में लागू नहीं होता है। समाजवाद का भारतीय स्वरूप अवश्य ही गांधीवादी सर्वोदय की अहिंसा और विकेन्द्रीकृत पैटर्न का अनुसरण करे जो गरीब और कृषि–प्रधान देश के अनुरूप हो।

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

हाल के वर्षों में अनुभवी गांधीवादियों, जे0सी0कुमारप्पा और सुन्दरलाल के विचारों के कारण एक अन्य वाद–विवाद उत्पन्न हुआ है। वे मानते हैं कि मार्क्सवाद और गांधीवाद के बीच बहुत कम मुद्दे हैं। गांधीवादी, हिंसाहीन मार्क्सवाद है। उनका बलपूर्वक कहना है कि क्रांति के उपरांत चीन में सरलता, अहिंसा और शक्ति के विकेन्द्रीकरण के गांधीवादी सिद्धांत को सक्रिय रूप से अपनाया गया था जो चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के मार्क्सवादी दर्शन के आधार पर स्पष्टतः तैयार हुआ था।

REFERENCES

1. Prof. Hancy-"History of Economic Thought" 4th edition P.4
2. J.F. Bell- "A History of Economic Thought" P. 3
3. Schumpeter - "A History of Economic Analysis" 1961 P. 38
4. Amartya Sen - "Social Choice Theory"
5. J.C. Kumarappa - "The Theory of Gandhian Economics"
6. "CDP of Allahabad" - Jawahar Lal Nehru Urban Renewal Mission (2006)
7. Accssed October 2, 2015. http://jnurm.nic.in/cdp-of allahabad.html.
8. M. Gandhi - "Hind Swaraj" and "Harijan"
9. M. Jhingan - "The Theory of Economic Thought" 2008
10. Yojna - Yonja 2006
11. "The Horizon" - A Journal of Social Sciences '1997'
13. "The Hindu" - June 9, 2002 Journal

*****